जनजातीय लोकगीतों एवं लोकनृत्यों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

जनजातीय लोकगीतों एवं लोकनृत्यों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

श्रीमती बसंत नाग
सहायक प्राध्यापक समाजशास्त्र
भानुप्रतापदेव शासकीय
स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर
(छ.ग.)

नमूना SAMPLE

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस
दिल्ली (भारत)

द्वारा प्रकाशित

अखण्ड पब्लिशिंग हाऊस

Publisher, Distributor, Exporter having an Online Bookstore

एल-9ए, प्रथम तल, गली न. 42,
सादतपुर एक्सटेंसन, दिल्ली-110094 (भारत)
Phone : 9968628081, 9555149955, 9013387535
E-mail : akhandpublishinghouse@gmail.com
akhandpublishing@yahoo.com
Website : www.akhandbooks.com

जनजातीय लोकगीतों एवं लोकनृत्यों का समाजशास्त्रीय अध्ययन

संस्करण : 2019
© लेखक
ISBN: 978-93-88998-16-1

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी हिस्से को प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इलेक्ट्रॉनिक या किसी अन्य माध्यम द्वारा पुनः प्राप्ति समेत किसी भी रूप में प्रतिलिपिकृत, अनुवादित, संगृहीत नहीं किया जा सकता है और न ही किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम द्वारा इसे प्रसारित किया जा सकता है।

इस पुस्तक में लेखक द्वारा व्यक्त विचार उनके व्यक्तिगत हैं जिसका प्रकाशक से कोई संबंध नहीं है।

भारत में प्रकाशित

झपसू यादव द्वारा 'अखण्ड पब्लिशिंग हाउस' के लिए प्रकाशित। वी.एम. ग्राफिक, दिल्ली द्वारा कवर डिजाइन व शब्द संयोजन तथा वी.एम. ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली से मुद्रित।

SAMPLE

प्राक्कथन

किसी भी राष्ट्र की पहचान वहाँ की लोककला और संस्कृति के आधार पर किया जाता है। भारत प्रारंभ से ही संस्कृति प्रधान देश रहा है, लोकगीत एवं लोकनृत्य इसी संस्कृति का अभिन्न अंग है जो अनादिकाल से प्राकृतिक पर्यावरण में पुष्पित, पल्लवित एवं सौंदर्य बिखरेती रही है। जनजाति भारतीय समाज का महत्वपूर्ण अंग है जो उन्हें एक निराली छवि प्रदान करती है। प्रकृति से जुड़े होने के कारण उनकी समस्त क्रियायें अदभूत, विलक्षण और आकर्षक है। बस्तर क्षेत्र जनजातियों का समुच्चय हैं। यहाँ मुख्य रूप से गोंड़, हल्बा, भतरा, पारधी, मुरिया, माड़िया जनजाति पाये जाते है। जिनकी अपनी विशिष्ट प्रकार के नृत्य, गीत, कला, संस्कृति रहा है, जो अन्य समुदायों से अलग दिखाई पड़ता है। लोकगीत और लोकनृत्य जनजाति समाज का प्राणतत्व है जिनमें उस विशिष्ट जाति, समुदाय की विशिष्टता के बीज सुप्त रहता है। लोकगीतों एवं लोकनृत्यों के माध्यम से समाज में व्याप्त सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तत्वों, पर्व तथा प्रथाओं को स्पष्ट रूप से जाना जा सकता है। उत्तर बस्तर कांकेर के जनजातीय समाज में जन्म संस्कार से लेकर मृत्यु संस्कार तक लोकगीत और लोकनृत्य की परम्परा का प्रचलन रहा है, लोकगीत और लोकनृत्य मात्र मनोरंजन और सौंदर्यबोध के परिचायक नहीं होते बल्कि व्यक्ति की सामाजिक, सूक्ष्म भावनाओं, उनके जीवन से जुड़े विभिन्न पक्षों तथा संबंधों को भी दर्शाते है। जनजातियों की धार्मिक विश्वास, तांत्रिक क्रियायें, टोटम (गोत्र-चिन्ह), पर्व, वाद्य यंत्र, लोकगीतों और लोकनृत्य प्रस्तुत करने के अवसर पर धारण किये जाने वाले आभूषण, परिधान श्रृंगाार, बोली, भाषा, आभिचारिक क्रियायें, विशिष्ट जनजातियों की सांस्कृतिक, सामाजिक, भौगोलिक क्षेत्र और आध्यात्मिक पहचान को अभिव्यक्त करती है।

वास्तव में लोकगीत और लोकनृत्य केवल ''स्वतः सुखाय'' नहीं है बल्कि धार्मिक विश्वास आस्था, कर्मकाण्ड, मानवीय प्रकृति, सौजन्यता से परिपूर्ण सामाजिक संगठन का मूल आधार है। लेकिन आज के बदलते परिवेश में भौतिकवादी संस्कृति, वैश्वीकरण, आधुनिकीकरण, परसंस्कृतिग्रहण, पश्चिमीकरण, संचार माध्यमों के

SAMPLE

प्रचार-प्रसार, नगरीयकरण, विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी के प्रभाव से पूर्वजों द्वारा स्थापित मान्यताओं, परम्पराओं को नकारते जा रहे हैं। इन सभी का प्रभाव जनजाति लोकगीतों और नृत्यों पर भी पड़ रहा हैं। युवा वर्ग सर्वाधिक इससे प्रभावित है। भौतिकवादी संस्कृति की चमक-दमक से लोकगीतों और लोकनृत्यों की मौलिकता नष्ट हो रही है। अब यह केवल प्रदर्शन तक सीमित रह गया है। परिवर्तन प्रकृति का शाश्वत नियम है लेकिन जिन परिवर्तनों से सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक एवं पारम्परिक धरोहरों की मौलिकता तथा मूल स्वरूपों का हनन हो रहा हो तो उन्हें सुरक्षित और संरक्षित करने के लिए परिवर्तन के कारणों को जानना आवश्यक है। वास्तव में लोकगीत और लोकनृत्य जनजाति संस्कृति वह भाग है जिनके माध्यम से किसी भी समाज की संगठन एवं संरचना को समझा जा सकता है। लोकगीतों एवं लोकनृत्यों का आधुनिक शिक्षा से कोई संबंध नहीं है फिर भी शिक्षितों का मार्गदर्शन करती है। इस पुस्तक के द्वारा जनजातीय जीवन के विविध पहलुओं को जान सकते है, लोकगीतों और लोकनृत्यों की उत्पत्ति, प्राचीन स्वरूप, परिवर्तन, परिवर्तन के कारण, वर्तमान में इनके स्वरूप, विभिन्न क्षेत्रों में इनके प्रभाव को ज्ञात कर सकते हैं। इस पुस्तक के माध्यम से नये तथ्य सामने आयेंगें। जिससे पुराने और नये तथ्यों को जोड़ने की दिशा मजबूत होगी। अल्पज्ञान के स्थान पर व हद ज्ञान का विकास होगा। समाज के सभी वर्गों के लिये इसका अध्ययन ज्ञानवर्धक, सार्थक और उपयोगी होगा एवं शोधकर्ताओं को दिशा-निर्देश प्रदान करने में सहायक होगा। इस पुस्तक के माध्यम से मैंने जनजाति जीवन से जुड़ी सूक्ष्म से सूक्ष्म भावनाओं को दर्शाने का प्रयास किया है। जनजाति समाज के लोकगीतों और नृत्यों को वर्तमान संदर्भ से जोड़कर उनके संवर्धन हेतु प्रयास किया जा सकता हैं।

डॉ. (श्रीमती) बसंत नाग
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र
भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, कांकेर (छ.ग.)

आभार प्रदर्शन

सफलता के मार्ग कठिन, लम्बे और थकावट से भरे है। "All the roads to success is hard, long and tiring" यह कथन सत्य है, किन्तु इसे सरल सुविधाजनक व सही दिशा में निर्देशित करने में मार्गदर्शक का अमूल्य योगदान रहता है। समर्थ सुयोग्य और सफलता तक पहुचने के लिये कुशल मार्गदर्शन की आवश्यकता पड़ती है। अत: कार्य के सम्पादन में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से जिन्होंने सहयोग प्रदान किया है, उनके प्रति केवल आभार प्रदर्शित करना ही पर्याप्त नहीं है, अपितु ये हमारी अभिव्यक्ति का माध्यम है।

प्रस्तुत शोध में आज जिस स्वरूप को प्राप्त कर सकी उसके लिये मैं विषय के सपूर्ण निर्देशन, मार्गदर्शन के रूप जो मुझे आज संघर्ष करने योग्य बनाया उसके लिये सदैव अपने शोध निर्देशक डॉ. ए.पी. श्रीवास्तव के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। उनकी उदारता, सरलता तथा ज्ञान के समक्ष आजीवन ऋणी रहूंगी, मेरा शीश सदैव नत रहेगा।

प. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय रायपुर समाजशास्त्र अध्ययनशाला के अध्यक्ष डॉ. प्रमोद कुमार शर्मा के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके सहयोगात्मक व्यवहार, प्रेरणायें, अमूल्य सुझाव मेरे लिये अत्यंत उपयोगी सिद्ध हुई, उनको श्रद्धापूर्वक नमन।

डॉ. एल.एस. गजपाल (व्याख्याता) प. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय समाजशास्त्र विभाग जिन्होंने कठिन परिस्थिति में मेरा मनोबल बढ़ाया जिनके बहुमूल्य सुझाव, सहयोग व समय मेरे लिये सदैव अविस्मरणीय रहेगा, मै सदैव ऋणी रहूँगी। डॉ. के. आर. मण्डावी, प्राध्यापक इतिहास विभाग, डॉ. एल.आर. सिन्हा (अर्थशास्त्र), डॉ. विजय कुमार रामटेके (समाजशास्त्र), डॉ. के.आर. ध्रुव (समाजशास्त्र) भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर के प्रति नतमस्तक हूँ, जिन्होंने व्यवहारिक ज्ञान तथा समयानुसार सहयोग प्रदान किया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. कोमल सिंह शार्वा सर के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिनके मार्गदर्शन और आत्मीय सहयोग से यह कार्य संभव हो पाया।

SAMPLE

माता-पिता का आशीष प्रत्येक के लिये आत्मसबल होता है, मै अपने पूज्य पिताजी श्री जे.एल. मण्डावी, माता जी श्रीमती श्यामादेवी मण्डावी के प्रति नतमस्तक हूँ, जिनके आशीर्वाद से शोध कार्य को सम्पूर्ण कर सकी। अपने चाचा श्री नवलसिंह मण्डावी, चाची श्रीमती हेमलता मण्डावी के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके स्नेहिल आशीर्वाद एवं प्रोत्साहन के कारण शोध प्रबंध को पूर्ण कर सकी। मैं अपने पति डॉ. डी.बी. नाग के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ जिन्होंने विषम परिस्थिति में ढाढस बंधाया जिनके असीम स्नेह, दुआ और प्रेरणा ने मेरा मनोबल बढ़ाया और सहयोग प्रदान किया।

भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय कांकेर के ग्रंथपाल श्री पी.के. श्रीवास्तव तथा सहायक ग्रंथपाल श्रीमती ललिता शर्मा के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने पाठ्य सामाग्री उपलब्ध कर सहयोग प्रदान किया। कु. कंचन मसराम सहायक प्राध्यापक समाज शास्त्र, शासकीय महाविद्यालय बालाघाट कि भी आभारी हूं, जिन्होंने मुझे सहयोग प्रदान किया।

देव कम्प्यूटर्स कांकेर संचालक श्री बलवंत सिंह चन्देल के प्रति हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके सहयोग, धैर्य तथा प्रोत्साहन के कारण शोध प्रबंध का टंकण कार्य पूर्ण हुआ। विजय बुक स्टाल, कांकेर के श्री प्रमोद चोपड़ा के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिनका निरंतर सहयोग मिला।

अंत में उन सभी लेखको, रचनाकारों का आभारी हूँ, जिनकी रचनाओं का लाभ उठाकर हमारा मस्तिष्क कुछ पुनरोत्पादित कर पाया।

उन सभी उत्तरदाताओं का भी आभारी हूँ, जिन्होंने अमूल्य समय, जानकारी प्रदान कर शोध प्रबंध को पूर्ण करने में अमूल्य सहयोग प्रदान किया। उन सभी स्नेहीजन, प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग करने वालों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके सहयोग, सद्भावना के कारण अपने शोध प्रबंध को पूर्ण कर सकी।

डॉ. (श्रीमती) बसंत नाग
सहायक प्राध्यापक, समाजशास्त्र
भानुप्रतापदेव शासकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, कांकेर (छ.ग.)

अनुक्रमणिका

प्राक्कथन		*v*
आभार प्रदर्शन		*vii*
तालिका-सूची		*xiii*
आरेख-सूची		*xix*
अध्याय	**विवरण**	**पृ.क्र.**
प्रथम	— **प्रस्तावना**	**1**
	— **अध्ययन क्षेत्र का परिचय** छत्तीसगढ, बस्तर संभाग, उत्तर बस्तर काकेर स्थिति एवं विस्तार प्रशासनिक ईकाइया, कृषि, अप्रवाह प्रणाली, वर्षा वनस्पति और मिट्टियां, शिक्षा, उत्तर बस्तर की जनसंख्या	
	— **जनजातीय परिचय** प्रमुख विशेषताएं, जनजातियों की संख्या, प्रमुख जनजातियां, गोंड, भतरा, मुरिया, माडिया, दोरला, हल्बा, जनजातियों के खानपान	
	— **अध्ययन का समाजशास्त्रीय महत्व**	
	— **शोध साहित्य का पुनरावलोकन**	
	— **अध्ययन का उद्देश्य**	
	— **शोध प्राकल्पनायें**	
	— **अध्ययन पद्धति** चयननित विकास खंडों के आधार पर क्षेत्र का विवरण उत्तरदाताओं का चयन तथ्य संकलन की विधि	

नमूना SAMPLE

तथ्य प्रस्तुति करण
अध्ययन की सीमाएं

द्वितीय **अध्ययनगत उत्तरदाताओं की सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि** **60**

— उत्तरदाताओं की सामान्य जानकारी
लिंग, आयु, जनजाति, गोत्र, शिक्षा, मातृभाषा, धर्म
वैवाहिक स्थिति, व्यवसाय, मासिक आय

— पारिवारिक विवरण
परिवार का आकार, परिवार का प्रकार
परिवारिक सदस्यों का लिंग, आयु शिक्षा, वैवाहिक
स्थिति, व्यवसाय, आय

— आर्थिक पृष्ठभूमि
व्यवसाय, मकान की स्थिति, मकान का स्वरूप
मकान में सुविधाये, वाहन,
वाहन के आधार पर विवरण, पशुधन

तृतीय **जनजातीय लोकगीतों व लोकनृत्यों का स्वरूप** **92**

— लोकगीत, नृत्य एवं संगीत की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

— जनजातीय समाज में गीतों और नृत्यों से संबंधित अवधारणा
जनजातीय नृत्य, गीत कला का विकास
लोकनृत्य की उत्पत्ति, लोकगीत
संगीत का स्वरूप, विशेषताएं एवं प्रकार
लोकगीत और वाद्य

— संस्कार से संबंधित गीत
जन्म संस्कार, विवाह संस्कार, मृत्यु संस्कार

— धार्मिक संस्कारो से संबंधित गीत और नृत्य

— पर्व से संबंधित गीत और नृत्य

— विविध गीत और नृत्य

चतुर्थ **अध्ययनगत समूह में जनजातीय संस्कृति के प्रति अभिरुचियों का अध्ययन** **232**

— महिलाओं की अभिरूचियों का अध्ययन
— पुरुषों की अभिरूचियों का अध्ययन
— युवाओं की अभिरुचियों का अध्ययन

SAMPLE

— शिक्षितों की अभिरुचियों का अध्ययन

पंचम **जनजातीय लोकगीतों एवं लोकनृत्यों का सामाजिक परिदृश्य** **261**

— संस्कार से संबंधित गीत एव नृत्य
— धार्मिक अनुष्ठान से संबधित गीत एवं नृत्य
— आर्थिक क्रियाओं से संबंधित गीत एव नृत्य
— पर्वों से संबंधित गीत एवं लोक-मूल्य

षष्टम **लोकगीतों एवं लोकनृत्यों पर आधुनिकीकरण का प्रभाव एवं विभिन्न आयाम** **347**

सप्तम **जनजातीय लोकगीतों एवं लोकनृत्यों का वर्तमान समय में प्रासंगिकता** **382**

अष्टम **निष्कर्ष एवं सुझाव** **389**

संदर्भ-ग्रंथ सूची ***412***

साक्षात्कार-अनुसूची ***422***

नमूना • SAMPLE

नमूना • SAMPLE

तालिका-सूची

तालिका क्र. विवरण

2.1 उत्तरदाताओं का लिंग
2.2 आयु के आधार पर उत्तरदाता. का वर्गीकरण
2.3 जाति के आधार पर उत्तरदाताओं की स्थिति
2.4 जनजातियों के गोत्र
2.5 उत्तरदाताओं का शैक्षणिक स्तर
2.6 उत्तरदाताओं का मातृभाषा
2.7 उत्तरदाताओं का वैवाहिक स्थिति
2.8 धर्म के आधार पर उत्तरदाताओं का विवरण
2.9 व्यवसाय की प्रकृति
2.10 मकान की स्थिति
2.11 मकान का स्वरूप
2.12 भौतिक सम्पत्ति के आधार पर आवृत्ति
2.13 वाहन के आधार पर विवरण
2.14 उत्तरदाताओं का पशुधन संबंधी विवरण
2.15 उत्तरदाताओं का परिवार का आकार
2.16 उत्तरदाताओं का परिवार का प्रकार
2.17 उत्तरदाताओं का परिवारिक सदस्यों का लिंग संरचना
2.18 उत्तरदाताओं का परिवारिक सदस्यों का आयु संरचना
2.19 उत्तरदाताओं का परिवारिक सदस्यों का शिक्षा का स्तर
2.20 उत्तरदाताओं का परिवारिक सदस्यों की वैवाहिक स्थिति
2.21 उत्तरदाताओं का परिवारिक सदस्यों का व्यवसाय
2.22 उत्तरदाताओं का परिवारिक सदस्यों का मासिक आय
2.23 उत्तरदाताओं का कृषि योग्य भूमि

FREE SAMPLE

4.1 लोकगीतों का प्रचलन संबंधी
4.2 महिलायें और पुरुष लोकगीत गाते है
4.3 महिलायें और पुरुष साथ-साथ गीत गाते और नृत्य करते हैं
4.4 महिला और पुरुष लोकनृत्य करते है
4.5 लोकगीत और लोकनृत्य प्रचलित अवसर
4.6 लोकनृत्य करने वाले वर्ग
4.7 वेशभूषा संबधी जानकारी
4.8 सौन्दर्य प्रसाधन प्रयोग किया जाना
4.9 सौन्दर्य प्रसाधन हेतु प्रयोग की जाने वाली वस्तु
4.10 उत्तरदाता का लोकगीतों व लोकनृत्यों को स्वीकारने का कारण
4.11 लोकगीतों में विशेष वाद्य यंत्रों का प्रयोग
4.12 लोकगीतों व लोकनृत्यों में वाद्य यंत्रों का प्रयोग
4.13 लोकगीतों व लोकनृत्यों को करने के विशेष स्थान
4.14 लोकगीत और लोकनृत्य को करने के पूर्व विशिष्ट देवी-देवता के पूजा
4.15 लोकगीतों और लोकनृत्यों के माध्यम से समाज को विशिष्ट पहचान
4.16 पुरुषों और महिलाओ के गीत व नृत्य का जानकारी
4.17 लोकगीत व लोकनृत्य भावनाओ को संप्रेक्षण करने का माध्यम
4.18 लोकगीतों और लोकनृत्यों में सहभागिता
4.19 लोकगीतों और लोकनृत्यों की परम्परा का महत्व
4.20 परिवार की महिलाओं का लोकगीतों और लोकनृत्यों में सहभागिता
4.21 लोकगीतों और लोकनृत्यों में महिलाओं की सहभागिता का कारण
4.22 महिलाओं का लोकगीतों व लोकनृत्यों में सहभागिता न होने का कारण
4.23 लोकगीतों और लोकनृत्यों में सबसे अधिक रूचि रखने वाली महिलाएं
4.24 विशेष वर्ग की महिलाओं का रूझान लोकगीतों व लोकनृत्यों में सर्वाधिक
4.25 विशेष आयु वर्ग की महिलाओं का लोकगीतों और लोकनृत्यों पर संलग्नता
4.26 विशेष क्षेत्र की महिलाओं का रूझान लोकगीतों व लोकनृत्यों के प्रति सर्वाधिक
4.27 पुरुषों सदस्य लोकगीतों और लोकनृत्यों में रुचि
4.28 पुरुषों का लोकगीतों व लोकनृत्यों के प्रति रूचि का कारण
4.29 पुरुषों का लोकगीतों व लोकनृत्यों के प्रति रूचि नहीं रखने के कारण
4.30 पुरुषों की अभिरूचि लोकगीतों और लोकनृत्यों के प्रति अधिक होता
4.31 विशेष क्षेत्र के पुरुषों का रुझान लोकगीतों व लोकनृत्यों के प्रति सर्वाधिक
4.32 व्यवसाय के आधार पर लोकगीतों और लोकनृत्यों के प्रति अभिरूचि
4.33 युवाओं की अभिरुचियों का अध्ययन

SAMPLE

4.34 लोकगीतों और नृत्यों के आयोजन में युवाओं की सहभागिता
4.35 शिक्षित वर्गो के लोकगीतों और लोकनृत्यों के प्रति अभिरूचि
4.36 शिक्षित वर्गो लोकगीतों और लोकनृत्यों में सहभागिता संबंधी
5.1 श्रम संबंधी गीत
5.2 श्रम संबधी गीतों का कारण
5.3 कृषि कार्य के अवसर पर
5.4 कृषि कार्य से संबंधित गीतों का स्वरूप
5.5 श्रम गीतों का स्वरूप
5.6 फसल संग्रहण और लोकगीत व लोकनृत्य
5.7 लोकगीत और लोकनृत्य अर्थोपार्जन के साधन
5.8 जन्मोत्सव में गीत एवं नृत्य का आयोजन
5.9 जनजातीय लोकगीत की भावनाए
5.10 बच्चों को सुलाने के लिए गीत गाया जाना
5.11 लोरी गाने वाले पारिवारिक सदस्य
5.12 लोरी में सन्निहित भाव
5.13 जनजातीय समाज में लोकगीतों के प्रचलन की परम्परा
5.14 विवाह के अवसर पर लोकगीतों का प्रचलन होना
5.15 वैवाहिक गीतों से संबधित रस्मों का विवरण
5.16 विवाह में नोकझोक वाले गीतों का प्रचलन होना
5.17 नोकझोक गीत गाने वाले पक्ष
5.18 वैवाहिक गीतों के मनोभाव
5.19 वैवाहिक गीतों में नृत्य का संचालन होना
5.20 वैवाहिक गीतों का नाम
5.21 मुकुट (मौर) के समय गीत गाया जाना
5.22 मौर गीतों में आयु का महत्व
5.23 फेरे गीत गाने वाले पक्ष
5.24 पेड़-पौधों का विवाह होना
5.25 पेड़-पौधों का विवाह के रस्म अदायगी का प्रचलन होना
5.26 पेड-पौधों के विवाह में लोकगीतों का समावेश
5.27 वृक्षों, के विवाह का उद्देश्य
5.28 केवल फलदार वृक्षों का विवाह होना
5.29 फलदार वृक्ष जिनका विवाह किया जाता है
5.30 वृक्षों के विवाह में वर तथा वधू पक्ष का होना

SAMPLE

5.31 वृक्षों के विवाह में वर पक्ष से सबधित लोग
5.32 वृक्षों के विवाह में नृत्य का समन्वय होना
5.33 मृत्यु सस्कार में गीत का प्रचलन होना
5.34 मृत्युगीत में नृत्य का समावेश
5.35 मृत्युगीत में नृत्य की परम्परा का कारण
5.36 मृत्युगीत व नृत्य की संचालित करने का सोपान के सदर्भ में
5.37 मृत्यु संस्कार में गीत को स्वीकारने का कारण
5.38 मृत्यु संस्कार में वाद्यों का प्रचलन होना
5.39 मृत्यु संस्कार में गीत गाने वाला वर्ग
5.40 पुरुष और स्त्री के मृत्यु संस्कार संबधी गीत में अन्तर
5.41 धार्मिक अनुष्ठान में लोकगीत का प्रचलन
5.42 धार्मिक गीत में नृत्य का संचालन से संबंधित
5.43 धार्मिक अनुष्ठान को क्रियान्वित करने वाले माध्यम
5.44 उत्तरदाताओं के अराध्य देव
5.45 धार्मिक लोकगीत व लोकनृत्य का सचालन
5.56. धार्मिक लोकगीत और नृत्य के कारण
5.47 धार्मिक लोकगीत और नृत्य के द्वारा अनिष्ट कारक प्रभाव से बचाव
5.48 धार्मिक गीत का प्रशिक्षण
5.49 सिद्धीकरण हेतु गीत और नृत्य
5.50 सिद्धीकरण गीतों का संचालन
5.51 सिद्धीकरण गीतों का प्रयोग करने वाले व्यक्तियों से संबधित, व्यक्तियों का नाम
5.52 तंत्र-मंत्र गीतों द्वारा बीमारी का इलाज संभव
5.53 तंत्र-मंत्र गीतों में विश्वास का कारण
5.54 तंत्र-मंत्र गीत देवी-देवता को प्रसन्न करने के माध्यम
5.55 तंत्र-मंत्र गीतों के प्रयोग के अवसर
5.56 तंत्र-मंत्र गीत हानिकारक होना
5.57 धार्मिक गीतों और नृत्यों में संलग्न वर्ग
5.58 महिलाओ से संबंधित गीत व नृत्य
5.59 चैतरई पर्व में लोकगीत और नृत्य
5.60 चैतरई पर्व में नृत्य
5.61 सुवा नृत्य में भागीदारी
5.62 महिलाओं से संबधित पर्व

SAMPLE

5.63 महिलाओ से सबधित पर्व का नाम
5.64 देवी-देवता से जगार का संबंध
5.65 जगार में गीत गाने के लिये प्रशिक्षित महिला
5.66 तीजा जगार, लक्ष्मी जगार में विशेष वाद्य यत्र का प्रयोग
5.67 धनकुल वाद्य यत्र का निर्माण किया जाना
5.68 धनकुल वाद्य यंत्र के लिये निश्चित स्थान
5.69 धनकुल की स्थापना
5.70 तीजा जगार और लक्ष्मी जगार के गीतों में अन्तर
5.71 तीजा जगार और लक्ष्मी जगार को गाने वाला वर्ग
5.72 नया फसल पर पर्व का आयोजन
5.73 नवाखाई पर्व की जानकारी
5.74 नवाखाई पर्व में गीत व नृत्य
5.75 नवाखाई में गीत का स्वरूप
5.76 नवाखाई पर्व में गीत व नृत्य का आयोजन
5.77 दण्डारास नृत्य व गीत
5.78 दण्डारास में सहभागी लोग
5.79 हुल्की नृत्य का संबंध पेड़-पौधों से होता है
5.80 हुल्की का आयोजन
5.81 हुल्की के आयोजन का दिन
5.82 हुल्की के आयोजन का प्रयोजन
5.83 दीपावाली के समय मनाये जाने वाला पर्व
5.84 गौरी-गौरा पर्व के आयोजन
5.85 गौरी-गौरा में गीत गाया जाना
5.86 गौरी-गौरा पर्व से संबंधित देवी-देवता
5.87 छेरछेरा गीत व नृत्य करने वाला वर्ग
5.88 छेरछेरा पर्व कब मनाया जाता है
5.89 होली में किये जाने वाले गीत व नृत्य
5.90 होली गीत से सबधित वर्ग
5.91 होली गीत व नृत्य के विभिन्न प्रकार
5.92 होली के अवसर पर विशेष वाद्य यंत्र का प्रयोग
6.1 परम्परागत लोगगीत और नृत्य के मूल स्वरूप में परिवर्तन होना
6.2 विवाह के अवसर पर वर्तमान में प्रचलित गीतों का स्वरूप
6.3 युवा वर्ग के पसंदीदा नृत्यों का वर्गीकरण

SAMPLE

6.4 पूर्व में प्रचलित वाद्य यंत्र
6.5 वर्तमान में प्रचलित वाद्य यंत्र
6.6 शिक्षित वर्ग का लोकगीतों व लोकनृत्यों के प्रति रूचि
6.7 वर्तमान में अनुष्ठानिक वाद्य यंत्र धनकुल का प्रचलन
6.8 लोकगीतों व लोकनृत्यों का रूचि न होने के कारण
6.9 शिक्षा का विकास लोकगीतों व लोकनृत्यों में परिवर्तन का कारण
6.10 शिक्षा से लोक संस्कृति में परिवर्तन
6.11 वेश-भूषा, में परिवर्तन
6.12 सौन्दर्य प्रसाधन का प्रयोग
6.13 जनजातीय गीतों पर फिल्मी और गैर फिल्मी धुनों का प्रभाव
6.14 वर्तमान में वर्ग विशेष के द्वारा लोकगीतों व नृत्यों को महत्व दिया जाना
6.15 लोकगीतों और लोकनृत्यों को स्वीकारने पर अनुभूति
6.16 क्षेत्र के आधार पर लोकगीतों व लोकनृत्यों का प्रचलन
6.17 लोकगीतों के सर्वाधिक प्रचलन के आधार पर क्षेत्र
6.18 मनोरंजन का सशक्त माध्यम
6.19 अन्य संस्कृतियों के सम्पर्क के कारण जनजातीय लोकगीतों व लोकनृत्यों में परिवर्तन
6.20 अन्य संस्कृति का प्रभाव लोकगीतों और लोकनृत्यों पर
6.21 सामूहिक भावना की कमी लोकगीतों व लोकनृत्यों के परिवर्तन का कारण
6.22 जनसंचार के माध्यम का विकास लोकगीतों व लोकनृत्यों के स्वरूपों में परिवर्तन का कारण
6.23 लोकगीतों व लोकनृत्यों के महत्व में कमी के कारण
6.24 फिल्मी गीतों व नृत्यों के माध्यम से लोकगीतों व नृत्यों पर कु प्रभाव
6.25 लोकगीतों व लोकनृत्यों का प्रदर्शन की वस्तु बन जाना
6.26 लोकगीतों व नृत्यों में परिवर्तन का दुष्परिणाम
6.27 लोकगीतों व लोकनृत्यों का महत्व धार्मिक अनुष्टान तक सीमित
6.28 लोकगीतों व लोकनृत्यों के संरक्षण के प्रयास
6.29 समाज के द्वारा संरक्षण के प्रयास के आधार पर
6.30 सरकार के द्वारा जनजातीय संस्कृति के संरक्षण के उपाय

SAMPLE

आरेख-सूची

तालिका क्र. **विवरण**

2.2 आयु के आधार पर उत्तरदाता. का वर्गीकरण
2.5 उत्तरदाताओं का शैक्षणिक स्तर
2.11 उत्तरदाताओं का मकान का स्वरूप
2.15 परिवार का आकार
2.18 परिवारिक सदस्यों का आयु संरचना
2.19 उत्तरदाताओं के परिवारिक सदस्यों का शिक्षा का स्तर
2.22 उत्तरदाताओं के परिवार का मासिक आय
2.23 कृषि योग्य भूमि
4.24 विशेष वर्ग की महिलाओं का रूझान लोकगीतों व लोकनृत्यों में सर्वाधिक
4.29 पुरुषों का लोकगीतों व लोकनृत्यों के प्रति नहीं रूचि रखने के कारण
4.30 पुरुषों की अभिरूचि लोकगीतों और लोकनृत्यों के प्रति अधिक होता है
4.36 शिक्षित वर्गो की लोकगीतों और लोकनृत्यों में सहभागिता संबंधी
5.3 जनजातीय लोकगीत और कृषि कार्य के विभिन्न अवसर
5.4 कृषि कार्य से संबंधित गीतों का स्वरूप
5.9 लोकगीत की भावनायें
5.11 लोरी गीत गाने वाले पारिवारिक सदस्य
5.18 वैवाहिक गीतों के मनोभाव
5.21 मुकुट धारण करने के समय गीत गाया जाना
5.23 फेरे के समय गीत गाने वाले पक्ष
5.27 वृक्षों, के विवाह का उद्देश्य
5.31 वृक्षों के विवाह में वर पक्ष से सबधित लोग
5.37 मृत्यु संस्कार में गीत को स्वीकारने का कारण
5.39 मृत्यु संस्कार में गीत गाने वाला वर्ग

SAMPLE

5.43 धार्मिक अनुष्ठान को क्रियान्वित करने वाले माध्यम
5.44 अध्ययनगत उत्तरदाताओं के अराध्य देव
5.53 तंत्र-मंत्र गीतों में विश्वास का कारण
5.55 तत्र-मंत्र गीतों का प्रयोग के अवसर
5.60 चैतरई पर्व में नृत्य
5.75 नवाखाई में गीत का स्वरूप
5.80 हुल्की का आयोजन क्षेत्र
5.87 छेरछेरा गीत व नृत्य करने वाले वर्ग
5.90 होली गीत से सबधित वर्ग
6.2 विवाह के अवसर पर वर्तमान में प्रचलित गीत का स्वरूप
6.3 युवा वर्ग के पसंदीदा नृत्यों का वर्गीकरण
6.5 वर्तमान में प्रचलित वाद्य यंत्र
6.8 लोकगीतों व लोकनृत्यों के प्रति रूचि न होने के कारण
6.12 सौन्दर्य प्रसाधन का स्वरूप
6.14 वर्तमान में वर्ग विशेष के द्वारा लोकगीतों व नृत्यों को महत्व दिया जाना
6.15 लोकगीत और लोकनृत्य को स्वीकारने पर अनुभूति
6.17 लोकगीतों का सर्वाधिक प्रचलन के आधार पर क्षेत्र
6.18 मनोरंजन का सशक्त माध्यम

नमूना • SAMPLE